P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-1* April- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जल संसाधन का मानव द्वारा उपयोग : प्रतापगढ़ जनपद (उ0प्र0) का भौगोलिक अध्ययन

अनुज सिंह
शोध छात्र,
भूगोल विभाग,
वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,
जौनपुर, उ0प्र0 , भारत

सारांश

जल जीवमण्डल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है क्योंकि एक तरफ तो यह सभी प्रकार के जीवों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा आवश्यक तत्व है तो दूसरी तरफ यह जीवमण्डल में पोषण तत्वों के संचरण तथा चक्रण में सहायता करता है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि तथा आर्थिक विकास के साथ–साथ स्वच्छ जल की मांग उसी आपूर्ति की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ रही है। जल अनन्त या अक्षुण्ण संसाधन नहीं बल्कि एक नाजुक एवं अपर्याप्त संसाधन बनता जा रहा है। मानव के लिए जल अत्यंत मूल्यवान संसाधन है। जिसका उपयोग अनेक महत्वपूर्ण कार्यों में किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधन की उपयोगिता का अध्ययन पेयजल (हैण्डपम्प), सिंचाई एवं मत्स्य उत्पादन के रूप में किया गया है।

मुख्य शब्द : संसाधन, जीवमण्डल, पोषण, अक्षुण्ण, सिंचाई।

प्रस्तावना

पृथ्वी का लगभग 17 प्रतिशत धरातल पानी से आच्छादित है परन्तु अलवणीय जल कुल जल का केलव लगभग 3 प्रतिशत ही है। प्रत्यक्ष रूप से देखा जाये तो उपलब्ध जल का एक बहुत छोटा भाग भी अलवणीय जल का है। अलवणीय जल की उपलब्धता स्थान और समय के अनुसार भिन्न–भिन्न है। जल संसाधन के आवंटन और नियन्त्रण के तनाव के साथ–साथ संपोषित विकास को ध्यान रखते हुए जल का मूल्यांकन एवं मानव द्वारा उपयोग किये जा रहे जल की उपयोगिता का भी ध्यान में रखना होगा। अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जैसे–बढ़ती आबादी के लिये भोजन की चुनौती, बेहतर जीवन के लिए बढ़ती आकांक्षाओं को पूरा करने की चुनौती, हर साल जीवन और आवास के लिए हो रहे बाढ़ और सुखे को नियन्त्रित करने की चुनौती और एक नाजुक पर्यावरण और पारिस्थितिकी प्रणाली को संतुलित करते हुए सतत विकास की प्रक्रिया को सुनिश्चित करने की चुनौती। अतः प्रमुख चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध पत्र के अन्तर्गत अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध जल संसाधन का मानव द्वारा हैण्डपम्प, सिंचाई एवं मत्स्य व्यवसाय के रूप में किया गया है।

साहित्यावलोकन

वर्तमान समय में जल की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए जल की संकट एवं तत्सम्बन्धी समस्याओं पर अनेंक शोध कार्य किये गये हैं एवं किये जा रहे है। प्रस्तुत शोध पत्र में निम्न साहित्यों का सहयोग लिया गया है–मुखर्जी, सच्चिदानन्द (जुलाई 2016)–अधिक विकास में जल संसाधन प्रबन्धन, जनार्दन (2012)–ग्रामीण स्तर पर घरेलू दूषित जल से उत्पन्न समस्यायें, अनमोल जल संसाधन (जुलाई 2016,योजना पत्रिका), जल संसाधन (N.C.E.R.T.–12), Murthy, V.V.N, 2008, Land and Water Management Engineering, मौर्या, एस० डी० (2016)–संसाधन भूगोल।

अध्ययन क्षेत्र

जनपद प्रतापगढ़ उत्तर प्रदेश का दक्षिण–पूर्वी भाग है जिसका विस्तार $25^0 34'$ से $36^0 11'$ उत्तरी अक्षांश तथा $81^0 19'$ से $82^0 17'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य है। इस जनपद की लम्बाई पश्चिम से पूर्व 115 किमी0 तथा चौड़ाई उत्तर से दक्षिण 40 किमी0 है। प्रतापगढ़ की उत्तरी सीमा सुल्तानपुर जनपद, पूर्वी सीमा जौनपुर जनपद, दक्षिणी सीमा इलाहाबाद जनपद, दक्षिणी–पश्चिमी सीमा कौशाम्बी जनपद तथा पश्चिमी सीमा रायबरेली जनपद द्वारा निर्धारित होती है अध्ययन क्षेत्र का औसत समुद्र तल की ऊँचाई 107 मीटर है। जनपद में 5 तहसीलें तथा 17 विकास खण्ड हैं।

प्रतापगढ़ जनपद (उ0प्र0)

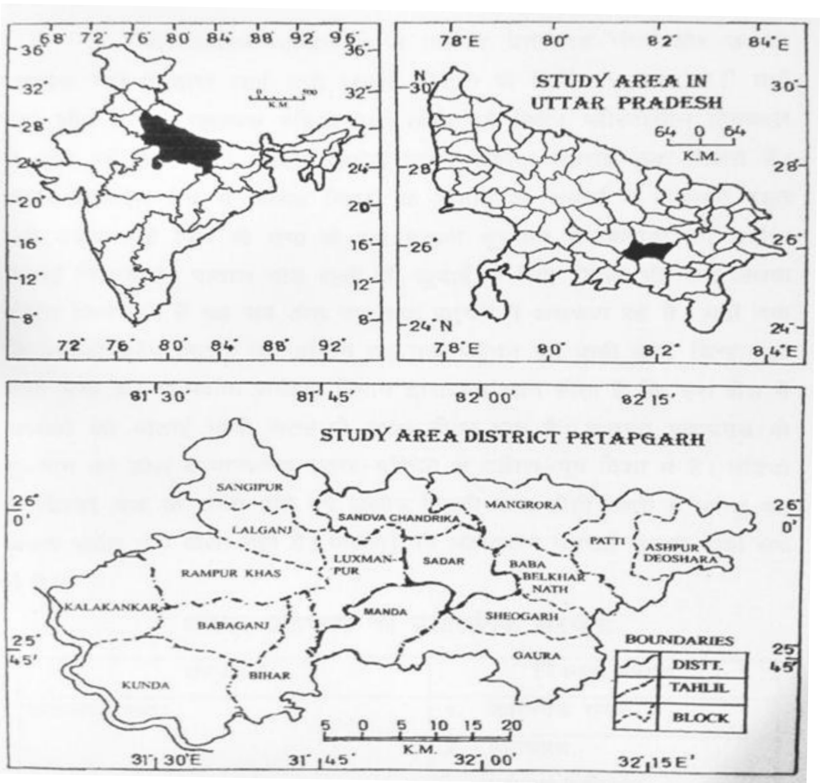

अध्ययन का उद्देश्य

1. प्रतापगढ़ जनपद में जल संसाधन की उपयोगिता का अध्ययन करना।
2. प्रतापगढ़ जनपद में मत्स्य उत्पादन में जल की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

शोध–पत्र में द्वितीयक आँकड़ों का उपयोग किया गया है। शोधकार्य से सम्बन्धित द्वितीयक आंकड़ों का संकलन जिला सांख्यिकीय पत्रिका के तथ्यों के आधार पर किया गया है। चयनित आँकड़ों तथा प्रतिदर्शों को विभिन्न घटनाओं एवं वितरणों के आधार पर एकत्र कर विभिन्न चरणों के परिप्रेक्ष्य में उनका विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र में जल संसाधन का उपयोग

अध्ययन क्षेत्र जनपद प्रतापगढ़ में जल संसाधन का मानव के द्वारा उपयोग बहुआयामी है। जहां जल संसाधन का उपयोग पेयजल के रूप में कूंओं, हैण्डपम्प के द्वारा किया जाता है। वहीं सिंचाई के रूप में इसका नहरों के माध्यम से उपयोग किया जा रहा है। झीलों एवं तालाबों में मत्स्य व्यवसाय धीरे–धीरे एक उद्योग का रूप ग्रहण करता जा रहा है। बकुलाही नदी में वर्ष भर अपूरित झील के रूप में जल से युक्त रहती है। जबकि छोटे–छोटे जलाशयों और बड़ी झीलों के द्वारा भी जल का उपयोग मानव अपने विभिन्न कार्यों हेतु करता है। जनपद प्रतापगढ़ में मानव द्वारा जल संसाधन के उपयोग प्रतिरूप को स्पष्ट करने के लिये विशेषतः हैण्डपम्प द्वारा पेयजल से लाभान्वित लोगों की संख्या विभिन्न स्रोतों द्वारा सिंचाई एवं मत्स्य पालन को आधार बनाया गया है। वस्तुतः यही वह महत्वपूर्ण कारक है जो जल संसाधनों के दृष्टिकोण से मानव के सन्दर्भ में अपनी उपयोगिता को व्यवहारिक रूप से प्रमाणित करते हैं।

मानव द्वारा जल संसाधन का उपयोग

क्र0 सं0	विकास खण्ड का नाम	हैण्डपम्प द्वारा पेयजल से लाभान्वित लोगों की संख्या
1.	कालाकाँकर	153576
2.	बाबागंज	189421
3.	कुण्डा	251912
4.	बिहार	233032
5.	साँगीपुर	187078
6.	लालगंज	145105
7.	लक्ष्मणपुर	158259
8.	सण्डवा चन्द्रिका	166877
9.	प्रतापगढ़ सदर	186440
10.	मानधाता	221140
11.	मंगरौरा	174478
12.	पट्टी	125227
13.	आसपुर देवसरा	183538
14.	शिवगढ़	159109
15.	गौरा	181004
16.	रामपुर संग्रामगढ़	157770
17.	बाबा बेल्खरनाथ	161933
योग–		**3035899**

स्रोत–जिला सांख्यिकी पत्रिका–2016, प्रतापगढ़ (उ0प्र0)

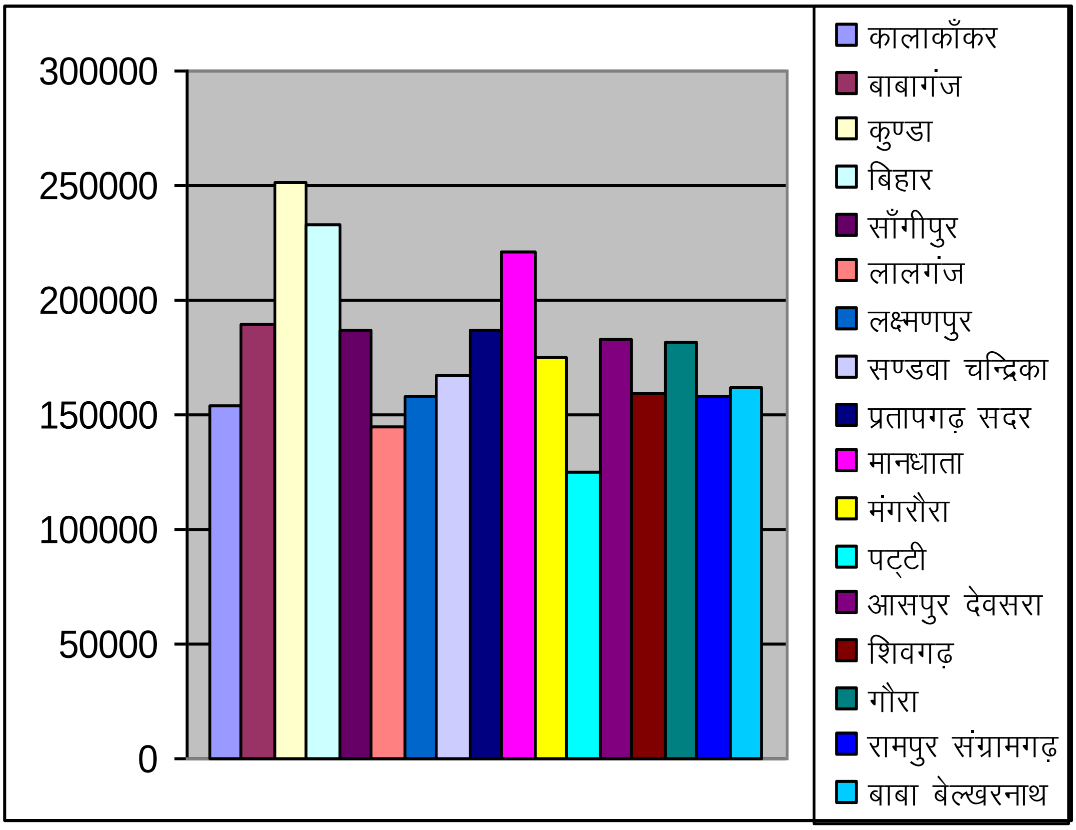

हैण्डपम्प द्वारा पेयजल से लाभान्वित लोगों की संख्या

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र में 3035899 लोग मात्र हैण्डपम्प के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से जल संसाधन का उपयोग पेयजल एवं अन्य उपयोगी कार्यों के रूप में कर रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र में सिंचाई में जन संसाधन का उपयोग

सिंचित भूमि के रूप में जनपद प्रतापगढ़ में मानव द्वारा जल का उपयोग विभिन्न रूपों में किया जाता है। जनपद में सरकारी एवं निजी नलकूपों द्वारा 58.12 प्रतिशत, नहरों द्वारा 41.08 प्रतिशत, कूंओं द्वारा 0.24 प्रतिशत, तालाबों से 0.56 प्रतिशत सिंचाई की जाती है।

अध्ययन क्षेत्र में मत्स्य व्यवसाय में जल संसाधन का उपयोग

जनपद प्रतापगढ़ में जल संसाधन का मानव के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण उपयोग मत्स्य व्यवसाय के रूप में देखा जा रहा है क्योंकि यहाँ मछली का उत्पादन व्यापक पैमाने पर किया जा रहा है। विभागीय जलाशय द्वारा (2015–16 में) 175.73 (हेक्टेयर) क्षेत्रफल भूमि पर 7029. 20 (कुन्टल) उत्पादन हुआ एवं निजी क्षेत्र के जलाशय द्वारा 1892.00 (हेक्टेयर) क्षेत्रफल भूमि पर में 75680 (कुन्टल) उत्पादन किया गया।

निष्कर्ष

जल संसाधन मानव जीवन का आधार है। मानव द्वारा आर्थिक क्रियाओं को सम्पादित करने के लिए जल सबसे महत्वपूर्ण संसाधन है। अतः जल का बहुत ही सावधानीपूर्वक उपयोग करने के साथ–साथ उसका संरक्षण भी आवश्यक है। जिससे वर्तमान के साथ–साथ हम अपने आने वाले भविष्य के लिए जल को सुरक्षित रख सकें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सिंह, जगदीश (2000): संसाधन भूगोल, ज्ञानोदय प्रकाशन, गोरखपुर।

सिंह, सविन्द्र, (2010): पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

Mishra, Manoj (2006): Environmental Challenges and Development, Aryan Publishing House, Allahabad.

एन.सी.ई.आर.टी. (2006): भारत भौतिक पर्यावरण, नई दिल्ली।

मौर्य एस0डी0 (2006): संसाधन भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (2004) (UNDP): रिड्यूसिंग डिजास्टर रिस्क : ए चैलेंज फार डेवलपमेंट, न्यूयार्क।

जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2016): प्रतापगढ जनपद (उ0प्र0)।